P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उच्च माध्यमिक स्तर पर नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

सारांश

एक ही विद्यालय की एक ही कक्षा में पारस्परिक सम्बन्धों के आधार पर विद्यार्थियों में भिन्नता पायी जाती है। विद्यार्थियों के इन आपसी सम्बन्धों के आधार पर कक्षा का स्वरूप निर्धारित होता है। एक ही कक्षा के विद्यार्थियों में एक–दूसरे के प्रति आकर्षण या अलगाव की प्रवृत्ति पायी जाती है। एक तरफ ऐसे विद्यार्थी(नायक) होते हैं जिन्हें कक्षा के अधिकांश सदस्य पसन्द करते हैं, उनसे मित्रता करना चाहते हैं तथा उनकी प्रशंसा करते हैं तो दूसरी तरफ उसी कक्षा में कुछ ऐसे विद्यार्थी(एकाकी) भी होते हैं जिन्हें कोई भी विद्यार्थी मित्र बनाना पसन्द नहीं करता, उनके पास बैठना भी पसन्द नहीं करता। एक विद्यार्थी किसी विद्यार्थी विशेष के प्रति प्रबल आकर्षण रखता है अथवा विरोधी भावना होती है।इस शोध अध्ययन में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर नायक विद्यार्थी एकाकी विद्यार्थियों की तुलना में मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ होते हैं।

मुख्य शब्द : नायक विद्यार्थी, एकाकी विद्यार्थी, मानसिक स्वास्थ्य।

श्याम सिंह
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

किरण पारीक
प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
एस.एस.जी.पारीक स्नातकोत्तर,
शिक्षा महाविद्यालय,
जयपुर

प्रस्तावना

बालक के व्यक्तित्त्व के विकास में माता–पिता, परिवार तथा विद्यालय की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त विद्यालय तथा शिक्षक का भी बालक के विकास का उत्तरदायित्व होता है क्योंकि बालक का अधिकांश समय विद्यालय में ही बीतता है और शिक्षा के द्वारा बालक की क्षमताओं और योग्यताओं का विकास किया जाता है। विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य के लिए शिक्षक की अहम् भूमिका होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी के साथ–साथ शिक्षक का भी मानसिक स्वास्थ्य उत्तम हो। यदि शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं है तो वह विद्यार्थियों की समस्याओ ंका हल नहीं कर सकता और न ही समुचित निर्देशन दे सकता है। शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। अतः विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य के लिए शिक्षक और प्रधानाचार्य दोनों ही उत्तरदायी होते हैं।

शिक्षण प्रक्रिया में रत विद्वजन विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करते हैं तथा इनकी प्राप्ति के लिए शिक्षण अधिगम क्रियाओं का आयोजन करते हैं। विद्यार्थी द्वारा जिस सीमा तक इन उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया जाता है, वही उसकी शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। शैक्षिक उपलब्धि, बालक द्वारा अधिगमित एवं प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधन है। है। शैक्षिक उपलब्धियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य महत्त्वपूर्ण परिस्थिति मानी जाती है।

यह भी सत्य है कि वही व्यक्ति खुश और प्रसन्न रहता है जो मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ होता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा की प्रक्रिया में मानसिक स्वास्थ्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती

जे. ए. हैडफील्ड के अनुसार

''सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व की पूर्ण एवं सन्तुलित क्रियाशीलता को मानसिक स्वास्थ्य कहते हैं।''

''उच्च माध्यमिक स्तर के नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्यमापन शिक्षण संस्थाओं के लिए छात्राओं की शक्ति का केन्द्र बिन्दु जानने और सुधार के लिए क्षेत्रों की पहचान करने में लाभदायक हो सकता है। विद्यालय की एक ही कक्षा में एक तरफ ऐसे विद्यार्थी(नायक) होते हैं जिन्हें कक्षा के अधिकांश सदस्य पसन्द करते हैं, उनसे मित्रता करना चाहते हैं तथा उनकी प्रशंसा करते हैं तो दूसरी तरफ उसी कक्षा में कुछ ऐसे विद्यार्थी(एकाकी) भी होते हैं जिन्हें कोई भी विद्यार्थी मित्र बनाना पसन्द नहीं करता।इसी महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस समस्या का चयन अध्ययन हेतु किया गया।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम मानसिक स्वास्थ्य के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ ली, अलेक्स युंग एवं अन्य (2017) ने ''अण्डरस्टैन्डिंग कैम्पस कल्चर एण्ड स्टूडेन्ट्स कॉपिंग स्ट्राटेजीज़ फॉर मेण्टल हैल्थ इस्यू इन फाइव कैनेडियन कॉलेजेज एण्ड यूनिवर्सिटीज़'' विषय का अध्ययन किया और पाया कि कनाडाई परिसर मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के बारे में जागरुकता बढा रहे हैं लेकिन मानसिक स्वास्थ्य को परिसर के बुनियादी ढाँचे का समर्थन प्राप्त नहीं है। जैनेल (2015) ने ''अ केस स्टडी इन पोस्ट सैकण्डरी मैथेमैटिक्स : द इम्पोर्टेन्स ऑव मेन्टल हैल्थ अवेयरनेस'' विषय पर अध्ययन किया और पाया कि लगातार असाइनमेन्ट शेड्यूल विद्यार्थियों की चिन्ता और तनाव को कम करते हुए आत्मविश्वास और समग्र ग्रेड को बढाने में मददगार हैं। सिन्हा, शरद तथा यादव, ज्योति (2012) ने "रेवाड़ी जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन" शीर्षक पर अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि *Public* तथा *Non-public* स्कूलों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।दुआ, राधा तथा शर्मा, नमिता (2012) का "मानसिक स्वास्थ्य पर घरेलू वातावरण का प्रभाव – माध्यमिक स्तर का अध्ययन" इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि उच्च नियंत्रण, उच्च संरक्षण, उच्च अनुपालन, उच्च पोषण, उच्च पारितोष तथा निम्न दण्ड, निम्न अस्वीकृति एवं निम्न विशेष अधिकारों का वंचन उत्तम मानसिक स्वास्थ्य के कारक हैं। बासु, सराह (2011) ने "माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन" नामक शीर्षक पर अपने अध्ययन में पाया कि अपने कार्य से संतुष्ट शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य अपने असंतुष्ट सहकर्मियों की अपेक्षा अच्छा है। सहारण, एस. के. तथा सेठी, प्रियंका (2010), अग्रवाल, सुभाषचन्द तथा दीक्षित, पवनशंकर (2005), शर्मा, अशोक कुमार तथा शर्मा, प्रतीक्षा (2003), एड. गाईड (2001) ने अपने अध्ययन मानसिक स्वास्थ्य तथा अन्य भिन्न चरों के साथ किये; किन्तु उच्च माध्यमिक स्तर पर नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेश में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, उच्च माध्यमिक स्तर पर नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययनकरने के उद्देश्य से किया गया।

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर पर नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

शोध का उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर पर नायक एवम् अलगाववादी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्यका अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर पर नायक एवम् अलगाववादी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण

मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण माला : अरुण कुमार सिंह एवम् अल्पना सेन गुप्ता

शोध न्यादर्श

सारणी –1

क्र.सं.	विद्यार्थी	योग
1	नायक	100
2	एकाकी	100
कुल		200

शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि
4. स्वतंत्रता अंश
5. आलोचनात्मक अनुपात अथवा टी–मान

परिकल्पना–1

उच्च माध्यमिक स्तर के नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1.1
(मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन)

विद्यार्थी	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	अन्तर की मानक त्रुटि SE_D	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	आलोचनात्मक अनुपात C.R.
नायक	100	70.235	15.439	1.80	18.594	198	10.33
एकाकी	100	51.641	9.339				

*** 0.01 स्तर पर सार्थक**

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 70.235 व 51.641 है तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 15.439 व 9.339 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 1.80 है तथा मध्यमानों का अन्तर 18.594 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 10.33 है जो कि 198 स्वतंत्रता के अंश हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.62 से अधिक है। अतः परिकल्पना–1 निरस्त होती है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है।

चूँकि नायक विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान एकाकी विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के नायक विद्यार्थी एकाकी विद्यार्थियों की तुलना में मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ होते हैं।

लेखाचित्र संख्या – 1

उच्च माध्यमिक स्तर के नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

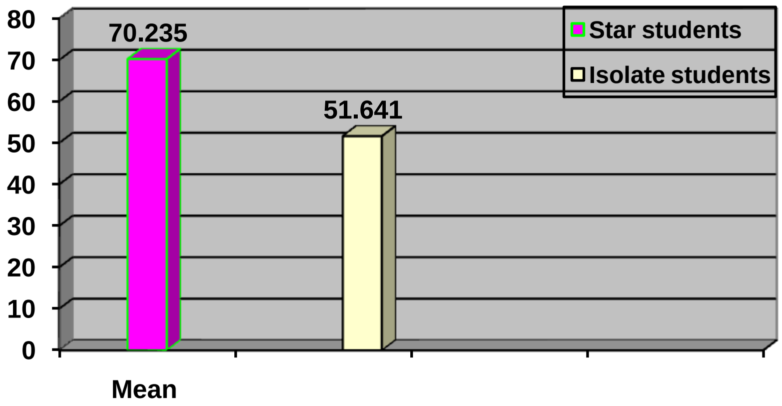

परिणाम

दत्त विश्लेषणानुसार उच्च माध्यमिक स्तर के नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। जो कि नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों में सार्थकता स्तर 0.01 पर मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों में सार्थक अन्तर के कारण है, अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के नायक विद्यार्थी एकाकी विद्यार्थियों की तुलना में मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ होते हैं।

उच्च माध्यमिक स्तर के नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 70.235 व 51.641 है, जो कि अत्यधिक अन्तर है। उक्त अर्थापन इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के नायक विद्यार्थी एकाकी विद्यार्थियों की तुलना में मानसिकस्वास्थ्य की दृष्टि से समान नहीं हैं, उनके मानसिक स्वास्थ्य में विशेष अन्तर है।

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर के नायक एवम् एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

सुझाव

1. एकाकी विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति अभिभावक सजगता में वृद्धि की जानी चाहिए।
2. एकाकी विद्यार्थियों में सामाजिक दृष्टिकोण में उपस्थित भिन्नता का निवारण किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गुप्ता एवं गुप्ताः (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
2. *गैरेट, एच.ई.: (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।*
3. *शर्मा, सुरेन्द्रः (2007), रिसर्च मैथडोलॉजी–शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।*
4. *बासु, सराह : (जनवरी–जून, 2011), ए स्टडी ऑफ मेन्टल हैल्थ एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ सैकण्डरी स्कूल टीचर्स, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष–30, अंक–1, pp 19–25*
5. *भार्गव, उषा : किशोर मनोविज्ञान, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रथम संस्करण, pp 266–268*
6. *दुआ, राधा तथा शर्मा, नमिता : (जनवरी–जून, 2011), इन्फ्ल्यूएन्स ऑफ होम एनवायरमेन्ट ऑन मेन्टल हैल्थः ए स्टडी ऑफ सैकण्डरी लेवल स्टूडेन्ट्स, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष–30, अंक–1, pp 37-41*
7. *सहारण, एस. के. तथा सेठी, प्रियंका : (जुलाई, 2010), उच्च माध्यमिक छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य पर घरेलू वातावरण का प्रभाव अध्ययन, नई शिक्षा, वर्ष–59, अंक–12, pp 21–26*
8. *सिन्हा, शरद तथा यादव, ज्योति : (जनवरी–जून, 2012), ए स्टडी ऑफ मेन्टल हैल्थ ऑफ सैकण्डरी*

स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रेवाड़ी डिस्ट्रिक्ट, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष–31, अंक–1, pp23–25

9. *Anuradha, K. :(August 2008), Menatal Health Problems in School Children : A Preliminary Review of Epidemiological Studies. Experiments in Education, Vol. XXXVI, No. 8, pp191-196.*
10. *Basu, Sarah :(July 2004), Job Satisfaction and Mental Health Among Teachers : A Survey. Experiments in Education, Vol. XXXVII, No. 4, pp94-96.*

Websites

11. *www.eric.ed.gov*
12. *www.scholar.google.com*
13. *www.shodhganga.inflibnet.ac.in*